भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-1 /अंक-6 / दिसम्बर-2021

खुशबू

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1/अंक -6/ दिसम्बर-2021

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

दिसम्बर माह

साका कैलेण्डर - 1943 विक्रम संवत - 2078 अयान - दक्षिणायन ऋतु - हेमन्त

सोम		06 मा. शु. तृतीया	13 मा. शु. दशमी	20 पौष. कृ. प्रतिपदा	27 पौष. कृ. अष्ठमी, कालाष्टमी, रुकमणी अष्ठमी
मंगल		07 मा. शु. चतुर्थी	14 मा. शु. एकादशी, गीता जयंती, मोक्षदा एकादशी	21 पौष. कृ. द्वितीया	28 पौष. कृ. नवमी
बुध	01 मा. कृ. द्वादशी	08 मा. शु. पंचमी, श्री राम जानकी विवाह, नाग पंचमी	15 मा. शु. द्वादशी	22 पौष. कृ. तृतीया,संकष्टी चतुर्थी व्रत	29 पौष. कृ. दशमी
गुरू	02 मा. कृ. त्रयोदशी,प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री	09 मा. शु. षष्ठी	16 मा. शु. त्रयोदशी,प्रदोष व्रत,धनु संक्राति	23 पौष. कृ. चतुर्थी	30 पौष. कृ. एकादशी, सफला एकादशी व्रत
शुक्र	03 मा. कृ. चर्तुदशी, श्री बालाजी जयंती	10 मा. शु. सप्तमी	17 मा. शु. चर्तुदशी	24 पौष. कृ. पंचमी	31 पौष. कृ. द्वादशी, प्रदोष व्रत
शनि	04 मा. कृ. अमावस्या	11 मा. शु. अष्ठमी	18 मा. शु. चर्तुदशी, दतात्रेय जयंती	25 पौष. कृ. षष्ठी, किसमस	
रवि	05 मा. शु. प्रतिपदा	12 मा. शु. नवमी	19 मा. शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, त्रिपुर भैरव जयंती	26 पौष. कृ. सप्तमी	

मा. - मार्गशीर्ष कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

प्राचीन काल मे मन्दिरो के प्रकार

मंदिर शब्द की उत्पत्ति कब हुई और मंदिर का निर्माण कब से शुरू हुआ ?

भारतीय सनातन धर्म में मंदिर का विशेष स्थान है। मंदिर शब्द संस्कृत भाषा से बना है। सरल भाषा में हिन्दुओं के **उपासनास्थल** को मन्दिर कहा जाता हैं। वह देवस्थान जहां अपने आराध्य की पूजा - अर्चना होती है एवं आराध्य देव के प्रति ध्यान या चिंतन किया जा सके उस स्थान को मंदिर कहते हैं। **मंदिर का शाब्दिक अर्थ 'घर' ही होता है।**

महाकाव्य और सूत्र ग्रंथों के अनुसार मंदिर की जगह **देवालय, देवायतन, देवकुल, देवगृह, कोविल, देवल, देवस्थानम, प्रासाद, क्षेत्रम** आदि शब्दों का प्रयोग होता था। मंदिर का सर्वप्रथम उल्लेख यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ **"शतपथ ब्राह्मण"** में मिलता है।

मंदिर का निर्माण सर्वप्रथम तकरीबन दस हजार वर्षो पूर्व वैदिक काल में हुआ था। वैदिक काल में ऋषि जंगल के अपने आश्रमों में ध्यान, प्रार्थना और यज्ञ करते थे, जिनके लिए आश्रम में ही अलग अलग स्थान बनाये जाते थे। यही आश्रम बाद में मठ, शक्तिपीठ और गुरुकुल में परिवर्तित हो गए। पुरातन काल में मंदिर का निर्माण लकड़ी से होता था। उस समय लोग शिव मंदिर का निर्माण और स्थानीय देवी - देवता का निर्माण करते थे।

तभी आज भी देश में सबसे प्राचीन ज्योतिर्लिंगों और शक्तिपीठों

को माना जाता है। उसके बाद प्राचीनकाल में यक्ष, नाग, शिव - पार्वती, माँ दुर्गा, भैरव, इंद्रदेव और विष्णु भगवान की पूजा और प्रार्थना का प्रचलन आया। 7वीं शताब्दी में भारत देश में पत्थरों द्वारा मंदिरों का निर्माण होने लगा, जिसकी शुरुआत आर्य संस्कृति वाले लोगो ने की थी। इसके बाद मंदिर के प्रमाण हमें रामायण काल में भी मिलते है, जहां माँ सीता तथा उनकी तीनो बहनें गौरी पूजा के लिए महल के प्रांगण में बने मंदिर में जाती थी। प्रभु मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का काल आज से लगभग 7 हजार 200 वर्ष पूर्व था यानि 5114 ईस्वी पूर्व में था।

सोमनाथ के मंदिर का अस्तित्व के प्रमाण ऋग्वेद में भी मिलते है इससे यह सिद्ध होता है कि भारत में मंदिर परंपरा कितनी पुरानी है। इतिहासकारो के अनुसार ऋग्वेद की रचना 7000 से 1500 ईसा पूर्व हुई।

प्राचीन मंदिर ऊर्जा और प्रार्थना के केंद्र माने जाते थे। बौद्ध काल और गुप्तकाल में हिन्दू मंदिरों को भव्यता प्रदान की जाने लगी और जो प्राचीन मंदिर थे उनका पुन: निर्माण किया जाने लगा। ये सभी मंदिर वास्तुकला और धर्म के नियमों को ध्यान में रखकर बनाए गए थे। अधिकतर मंदिरों का निर्माण कर्क रेखा या नक्षत्रों के ऊपर किया गया था। जिसका सबसे बेहतरीन उदाहरण **"उज्जैन के महाकाल का मंदिर और ओंकारेश्वर में ओंकारेश्वर- ममलेश्वर मंदिर"** है। यह दोनों मंदिर १२ ज्योतिर्लिंगों में गिने जाते है। दोनों मंदिरों के स्थान और निर्माण रचना में वास्तुकला के साथ साथ आकाशीय ग्रह-नक्षत्रों की चाल, दिशा ज्ञान एवं मौसम को ध्यान में रखकर स्थान चयन किया गया है।

पुरातन काल में मंदिर लकड़ी से बना एक कमरे नुमा होता था जिसमे एक खिड़की और छत होती थी। उसके बाद मंदिरों का वास्तु निर्माण बौद्ध शैली से होने लगा। जिसमे मंदिर के अन्दर एक गर्भगृह होता है जहां आराध्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है। **गर्भगृह के ऊपर गुंबद - नुमा (पिरामिड नुमा) संरचना होती है जिसे शिखर या विमान कहते हैं।** मन्दिर के गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा के लिये थोड़ा स्थान होता है और एक छोटा अथवा बड़ा बरामदा होता है। ऋषि-मुनियों की कुटिया भी पिरामिडनुमा रचना के आकार की होती थी। हमारे प्राचीन मकानों की छतें भी कुछ इसी तरह की होती थी। यह रचना बाद के कालों में परिवर्तित होती नजर आयी है।

पूर्व मध्यकालीन शिल्पशास्त्रों के अनुसार मंदिर स्थापत्य की तीन बड़ी शैलियाँ हैं – **नागर शैली, द्रविड़ शैली और वेसर शैली**। इन तीन शैलियों के अलावा भारतीय उपमहाद्वीप तथा विश्व के अन्य भागों में कुछ अलग शैलियाँ भी प्रचलित हैं।

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

‘की माला में पिरोना’

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

आपका लेख वेबसाईट पर भी
प्रकाशित किया जाएगा

विवाह पंचमी

राम-जानकी विवाह

भगवान श्रीराम चेतना और माता सीता प्रकृति शक्ति की प्रतीक हैं। चेतना व प्रकृति का मिलन का योग असाधारण है। मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को यह विशेष योग भगवान श्रीराम और माता सीता के विवाह उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे **"विवाह पंचमी"** कहते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जब प्रभु श्री राम और माता सीता का विवाह हुआ था, उस समय श्रीराम की उम्र 13 वर्ष तथा माता सीता की उम्र 6 वर्ष थी। विवाह के बाद श्रीराम 6 साल जनकपुरी में रहे और 12 वर्ष की आयु होने पर माता सीता अयोध्या गई थीं। माता सीता के स्वयंवर से संबंधित पौराणिक कथा है जो रामायण की प्रमुख घटनाओं में से एक है ।

सीता माता स्वयंवर –

सीता माता राजा जनक की पुत्री होने के साथ ही धरती माता की भी पुत्री थी इसलिए सीता माता को **"भूमिजा"** भी कहते हैं। सीता माता असाधारण कन्या व शक्ति का रूप थी जिस शिव धनुष को रावण भी नहीं हिला सका उसे माता ने आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान रख दिया था इसलिए राजा जनक चाहते थे कि सीता जी का विवाह उसी व्यक्ति से हो जो सीता जैसी प्रतिभाओं की विलक्षण शक्ति रखता हो। इसी कारण स्वयंवर रचा गया एवं शर्त रखी गई कि जो शिव धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा को चढ़ाएगा, उसी से सीता का विवाह संपन्न होगा। शिव धनुष को कोई राजा नहीं उठा सका तब वहां गुरु की आज्ञा के कारण साधु वेश में श्रीराम ने धनुष को एक ही हाथ से उठाकर प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए मोड़ा और वह दो भागों में टूटकर विभाजित हो गया। वह शुभ दिन था पंचमी का और उसी दिन दोनों का विवाह संपन्न हुआ।

भगवान राम और सीता का विवाह होने के बाद विवाह पंचमी तिथि पर ही उनकी तीनों बहनों उर्मिला माधवी और श्रुतकीर्ति का विवाह लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न से कराया गया। विवाह के बाद वैसे तो कई हीरे जवाहरात और राशि दासियों को भेंट में दी गई थी लेकिन माता जानकी अपने साथ **काली माता** की एक मूर्ति लेकर आई थी जिसे अयोध्या में प्रतिष्ठित किया गया। जिसे **छोटी देवकाली** के नाम से जाना जाता है। यह मूर्ति आज भी अयोध्या के बीचो-बीच विराजमान हैं बताया जाता है **पार्वती जी का रूप यहां सर्वमंगला महागौरी के रूप में विराजमान है।**

इस दिन विवाह करने से डरते हैं लोग, क्यों?

कई जगहों पर इस तिथि को शुभ नहीं माना जाता है। मिथिलांचल व नेपाल में कन्या विवाह वर्जित है। लोगों की मान्यता है कि विवाह के बाद प्रभु श्रीराम और देवी सीता को कई दुखों का सामना करना पड़ा था इसी कारण विवाह पंचमी के दिन विवाह करना उत्तम नहीं माना जाता है। दोनों को एक साथ रहने का सौभाग्य नहीं मिल पाया, इसलिए भी इस तिथि को विवाह के लिए उचित नहीं मानते हैं। दूसरे पक्ष से यह मान्यता भी है कि अगर विवाह होने में बाधा आ रही है तो विवाह पंचमी पर ऐसी समस्याएं दूर हो जाती है। मनचाहे विवाह का वरदान भी मिलता है। बाल्य कांड के अनुसार भगवान राम और सीता जी के विवाह प्रसंग का पाठ करना शुभ होता है संपूर्ण रामचरितमानस का पाठ करने से भी पारिवारिक जीवन सुख में होता है।

विवाह एवं पूजन विधि –

सुबह के वक्त स्नान करें व श्रीराम विवाह का संकल्प लें। भगवान राम व सीता की मूर्ति स्थापित करें इस दिन विशेष रंग के वस्त्रों का धारण किया जाता है श्रीराम पीले रंग और सीता माता को लाल रंग के वस्त्र धारण करवाते हैं। **"ॐ जानकी वल्लभाय नमः"** का जाप किया जाता है और साथ ही विवाह प्रसंग का पाठ किया जाता है। माता सीता और भगवान राम का गठबंधन किया जाता है आरती की जाती है फिर गांठ लगे वस्त्रों को अपने पास रखा जाता है शीघ्र विवाह और सब कुशल वैवाहिक जीवन की प्रार्थना की जाती है यथाशक्ति जप किया जाता है और निम्न दोहे का भी जाप किया जाता है -

पाणिग्रहण जब कीन्ह महेसा। हियँ हरषे तब सकल सुरेसा॥
बेद मन्त्र मुनिबर उच्चरहीं। जय जय जय संकर सुर करहीं॥

– **रजनी सुनील थानवी जी**

Luxurious

1, 2 BHK & JODI FLATS

with remarkable living experience

@ Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E)

Visit Sample Flat Today

Adjoining Jain Derasar

www.whiteberryresidency.com

98705 80810, 85913 69996

Kings weds Queens

Wedding Celebrations

Create your Wedding Invitation Card more magical with theme based Wedding Logo Design.

www.kingswedsqueens.com

मोक्षदा एकादशी

मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की **एकादशी, मोक्षदा एकादशी** कहलाती हैं। इस व्रत के प्रभाव से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन **श्री कृष्ण व गीता का पूजन** शुभ फलदायक होता है। भोजन कराकर दान आदि कार्य करने से विशेष फल प्राप्त होते है। **मोक्ष का अर्थ है मोह का त्याग**। इसलिए यह एकादशी मोक्षदा के नाम से भी जानी जाती है। इस दिन भगवान श्री विष्णु की धूप, दीप नैवेद्य आदि से भक्ति पूर्वक पूजा करनी चाहिए।

मोक्षदा एकादशी का संबंध महाभारत से भी जुड़ा है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को ही भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। महाभारत युद्ध के दौरान जब अर्जुन अपने सगे संबंधियों पर बाण चलाने से झिझक रहे थे तब द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण ने उन्हें गीता का सार भी इसी दिन समझाया था। इसलिए इस दिन गीता जयंती का पर्व भी मनाया जाता है।

मोक्षदा एकादशी कथा –

अर्जुन ने उत्पन्ना एकादशी की महिमा एवं महत्व आदि सुनकर प्रभु दामोदर से कहा – हे प्रभु! आपने मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी के विषय में बताया है, उससे मुझे बड़ी ही शांति प्राप्त हुई। अब कृपा करके मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी पड़ती है उसके विषय में भी बताने की कृपा करें। उसका नाम क्या है? उस दिन कौनसे देवी - देवता की पूजा की जाती है और उस पूजा की विधि क्या है? और यह व्रत करने से मनुष्यों को क्या फल मिलता है?

प्रभु! मेरे इन प्रश्नों का विस्तार सहित उत्तर देकर मेरी जिज्ञासा को दूर कीजिए, आपकी बड़ी कृपा होगी।

अर्जुन की जिज्ञासा सुन श्रीकृष्ण बोले- हे अर्जुन! तुमने बहुत ही श्रेष्ठ प्रश्न किया है, इसलिए तुम्हारा यश संसार में फैलेगा। मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी अनेक पापों को नष्ट करने वाली है। संसार में इसे मोक्षदा एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस एकादशी के दिन श्री दामोदर भगवान का धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए। हे कुंती पुत्र! इस एकादशी व्रत के प्रभाव से नरक में गए हुए माता, पिता, पितर आदि को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

मोक्षदा एकादशी की कथा इस प्रकार है –

वैखानस नाम का एक राजा प्राचीन नगर में राज करता था। उसके राज्य में चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण रहते थे। राजा अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन किया करता था। एक रात्रि को स्वप्न में राजा ने अपने पिता को नरक की यातनाएं भोगते देखा, इस प्रकार का स्वप्न देखकर राजा बड़ा ही व्याकुल हुआ। उसने ब्राह्मणों को बुलाकर उनके समक्ष अपने स्वप्न की बात बताई- हे ब्राह्मणों! रात्रि को स्वप्न में मैंने अपने पिता को नरक की यातनाएं भोगते देखा। उन्होंने मुझसे कहा है कि हे पुत्र! मैं घोर नरक भोग रहा हूँ। मेरी यहां से मुक्ति कराओ। जब से मैंने उनके यह वचन सुने हैं, तब से मुझे चैन नहीं है। मुझे अब राज्य, सुख, ऐश्वर्य, हाथी-घोड़े, धन, स्त्री, पुत्र आदि कुछ भी सुखदायक प्रतीत नहीं हो रहे हैं। अब मैं क्या करूं? कहां जाऊं? कृपया करके आप लोग मुझे कोई ऐसा तप, दान, व्रत आदि के बार में बताएं, जिससे मेरे पिता को मुक्ति की प्राप्ति हो। राजा के आंतरिक दुख की पीड़ा को सुनकर ब्राह्मणों ने आपस में विचार-विमर्श किया, फिर बोले- राजन! वर्तमान, भूत और भविष्य के ज्ञाता पर्वत नाम के एक मुनि हैं। वे अवश्य ही इसका कोई सरल उपाय आपको बता देंगे। ब्राह्मणों की बात मान राजा मुनि के आश्रम पर गए। आश्रम में अनेक शांतचित्त योगी और मुनि तपस्या कर रहे थे। चारों वेदों के ज्ञाता पर्वत मुनि दूसरे ब्रह्मा के समान बैठे जान पड़ रहे थे। राजा ने उन्हें दण्डवत प्रणाम किया तथा देखे गए स्वप्न की पूरी बात बताई और बोला- हे महर्षि! कृपया आप मेरा मार्गदर्शन करें कि ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए और किस प्रकार से मैं अपने पिता को नरक की यातना से मुक्ति दिलाऊं? राजा की सम्पूर्ण व्यथा को पर्वत मुनि ने गम्भीरतापूर्वक सुना, उन्होंने कहा - प्रिय राजन! मैंने अपने ध्यान शक्ति के द्वारा आपके

पिता जी के सभी कुकर्मों के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली है। उन्होंने पूर्व जन्म में अपनी पत्नियों के साथ बहुत भेदभाव किया था। उसी के कारण आपके पिता नरक में गये है। यह जानकर वैखानस बहुत दुखी हुआ और बड़े याचना भरे स्वर में कहा - **हे ऋषिवर!** मेरे पिता के उद्धार का आप कोई मार्ग बताने की कृपा करें, किस प्रकार से वह इस पाप से मुक्त हो सकेगे? पर्वत मुनि बोले - **हे राजन!** मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में जो मोक्षदा एकादशी आती है, जो मोक्ष प्रदान करने वाली होती है। आप इस मोक्षदा एकादशी पर व्रत करें और उस व्रत के पुण्य को अपने पिता को अर्पित कर दें। एकादशी के पुण्य प्रभाव से अवश्य ही आपके पिता की मुक्ति हो जाएगी। पर्वत मुनि से आशीर्वाद लेकर राजा अपने राज्य को लौट आया और परिवार सहित मोक्षदा एकादशी का विधि पूर्वक व्रत किया। इस व्रत के पुण्य को राजन ने अपने पिता को समर्पित किया। इस पुण्य के प्रभाव से उनके पिता को मुक्ति मिल गई।

जो लोग मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का उपवास करते हैं, उनके सभी बुरे कर्म नष्ट हो जाते हैं और अंत में उन्हें स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती हैं। इस उपवास से उत्तम और मोक्ष प्रदान करने वाला कोई भी दूसरा व्रत नहीं है। इस कथा को सुनने व पढ़ने से अनंत फल प्राप्त होता है। यह उपवास मोक्ष प्रदान करने वाला चिंतामणि के समान है। जिससे उपवास करने वाले की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसका उपवास केवल उपवास करने वाले मनुष्य का ही नहीं, अपितु उनके पितरों का भी भला करता है।

– **रूचि जी गोस्वामी**

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

जीवन एक संसार

सारी जिंदगी अच्छा करके
भी चंद पलों की गलती
इंसान को बुरा बना
देती है।

भलाई करते रहिये बहते
पानी की तरह,
बुराई खुद ही किनारे लग
जायेगी कचरे की तरह...।

परेशानी आए तो
ईमानदार रहिए
धन आए तो सरल रहिए
अधिकार मिलने पर
मौन रहिए
क्रोध आने पर शांत रहिए
यही है जीवन का
सही प्रबंधन

समय के साथ-साथ हालात
भी बदल जाते है,
इसलिए बदलाव में स्वयं को
बदल लेना ही बुद्धिमानी है।

मिट्टी का मटका
और परिवार की
कीमत सिर्फ बनाने
वाले को ही पता होती है,
तोडने वाले को नहीं...।

खामोशी किसी इंसान
की कमजोरी नहीं,
उसका बडप्पन होता है
वरना जिसको सहना
आता है उसको
कहना भी आता है...।

हिंदू संस्कृति में मनुष्य की आयु, आरोग्य, सुख और समृद्धि बढ़ाने के लिए वेदों में 16 संस्कार बताए गए हैं। शरीर, मन, मस्तिष्क और आत्मा को पवित्र करने के लिए यह संस्कार किए जाते हैं।

आइये जानते है सोलह संस्कारों के बारे में –

१) गर्भाधान संस्कार - उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए यह संस्कार किया जाता है, होने वाले माता-पिता को गर्भाधान से पूर्व अपने तन और मन की पवित्रता के लिए यह संस्कार करते हैं।

२) पुंसवन संस्कार - गर्भ के तीसरे महीने में पुंसवन संस्कार करना चाहिए क्योंकि इस समय तक गर्भस्थ शिशु के विचार तंत्र का विकास प्रारंभ हो जाता है। वेद, मंत्रों, यज्ञीय वातावरण एवं संस्कार सूत्रों की प्रेरणाओं से शिशु के मन पर श्रेष्ठ प्रभाव पड़ता है।

३) सीमंतोन्नयन संस्कार - गर्भपात रोकने के साथ-साथ गर्भस्थ शिशु एवं उसकी माता की रक्षा करना ही इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। पति अपनी गर्भवती पत्नी को छठे और आठवें महीने में मांग भर कर उसके रक्षक होने की हामी देता है। इसे ही सीमंतोन्नयन संस्कार कहते हैं।

४) जातकर्म संस्कार - नवजात शिशु के नालच्छेदन से पहले उसे दो बूंद घी और छह बूंद शहद का सम्मिश्रण मंत्रों के उच्चारण के साथ चटाते हैं। उसके बाद पिता यज्ञ करके नौ मंत्रों के उच्चारण से बालक के बुद्धिमान, बलवान, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवी होने की प्रार्थना करते हैं।

५) नामकरण संस्कार - मनोविज्ञान एवं अक्षर विज्ञान के अनुसार नाम का प्रभाव व्यक्ति के स्थूल - सूक्ष्म व्यक्तित्व पर पड़ता है। इसलिए नाम सोच समझ कर रखा जाना चाहिए। इस उद्देश्य से नामकरण संस्कार किया जाता है।

६) निष्क्रमण संस्कार - निष्क्रमण का मतलब बाहर निकलना। इस संस्कार में शिशु को सूर्य तथा चंद्रमा की ज्योति दिखाने का विधान है। जो शिशु को सूर्य के समान तेज एवं बल और चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करता है।

७) अन्नप्राशन संस्कार - जब शिशु के दांत उगने लगते हैं तब अन्नप्राशन संस्कार करते हैं। अन्न का प्रभाव व्यक्ति के मन और स्वभाव पर भी पड़ता है। इसलिए आहार स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ-साथ पवित्र और संस्कार युक्त होना चाहिए। इस संकल्पना के साथ अन्नप्राशन संस्कार करते हैं।

८) मुंडन संस्कार - इस संस्कार में शिशु के सिर के बाल उसकी आयु एक वर्ष की होने तक, या तीसरे वर्ष में पहली बार उतारे जाते हैं। शिशु के मस्तिष्क का विकास एवं सुरक्षा और उसका मानसिक विकास व्यवस्थित रूप से आरंभ हो जाए इसलिए मुंडन संस्कार महत्वपूर्ण माना जाता है।

९) कर्णवेध संस्कार - शिशु के कर्ण याने कानों की सुनने की शक्ति में वृद्धि तथा स्वास्थ्य रक्षा के लिए यह संस्कार किया जाता है।

१०) विद्यारंभ संस्कार - जो बालक/ बालिका की आयु शिक्षा ग्रहण करने की हो जाए तब उसका विद्यारंभ संस्कार किया जाता है। इससे उसमें पढ़ने का उत्साह पैदा किया जाता है। अक्षर ज्ञान, विषय ज्ञान के साथ-साथ जीवन को जीने का भी बोध और अभ्यास कराया जाता है।

११) उपनयन संस्कार - इस संस्कार को **'यज्ञोपवीत' या 'जनेऊ संस्कार'** भी कहते हैं। यज्ञोपवीत का अर्थ होता है, यज्ञ द्वारा पवित्र किया गया सूत्र (जनेऊ)। इसमें विद्यार्थी को वेदों का ज्ञान, ब्रह्मचर्य आश्रम के सिद्धांत एवं व्यवहारिक ज्ञान के बारे में बताते हैं।

१२) वेदारंभ संस्कार - इस संस्कार के बाद ही विद्यार्थी को वेद की शिक्षा ग्रहण करने योग्य माना जाता था। वेद आरंभ से पहले गुरु अपने शिष्यों को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने एवं संयमित जीवन जीने की प्रतिज्ञा कराते थे, तथा उसकी परीक्षा लेने के बाद ही वेदाध्ययन करते थे।

१३) केशांत संस्कार - वेदाध्ययन पूर्ण होने के बाद केशांत संस्कार गुरुकुल से विदाई लेने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का उपक्रम है।

१४) समावर्तन संस्कार - केशांत संस्कार के बाद समावर्तन संस्कार के तहत शिष्य को स्नान कराया जाता था और उसे **'विद्या- स्नातक'** की उपाधि दी जाती थी।

१५) विवाह संस्कार - परिवार निर्माण की जिम्मेदारी उठाने के योग्य शारीरिक, मानसिक परिपक्वता आ जाने पर युवक-युवतियों का विवाह संस्कार कराया जाता है। इस संस्कार के अनुसार विवाह केवल शारीरिक या सामाजिक अनुबंध ना होकर दांपत्य को एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक साधना का भी रूप दिया गया है।

१६) अंतिम संस्कार - मृत्यु के पश्चात वेद मंत्रों के उच्चारण से किए जाने वाले संस्कार को दाह संस्कार या श्मशान कर्म या अंत्येष्टि क्रिया आदि भी कहते हैं। इसमें मृत्यु के बाद शव को विधिपूर्वक अग्नि को समर्पित किया जाता है।

- योगिता सदानी जी

''पौष की देहरी पर
मद्धम रोशनी से नहाया।
शीत की चादर ओढ़े
नया साल आया।
हवाओं ने दस्तक देकर
अंगीठियों को सुलगाया।
ठिठुरते सूरज को
बादलों का दुशाला पहनाया।
शीत रजनी ने दिन पर
अपना आंचल लहराया।
ओस बूंदों ने धरा को
तारों से सजाया।
वादियों पर बर्फ ने
धवल चादर बिछाया।
चांद के हिस्से का
कोहरा थोड़ा और गहराया।
फिजाओं में जैसे कोई
नया रंग उभर आया।
यह जाड़ों का मौसम
जाने कितने रंग साथ लाया।''

- रुचि गोस्वामी जी

अपराजिता/ गोकर्ण फूल का मूंग दाल हलवा

पूनम राठी जी

सामग्री –

1 कप - मूंग दाल, पौन कप – देसी घी, आधा कप - ताजी मलाई, 1 कप दूध, 1 कप - पानी, 1 कप - चीनी, एक टीस्पून - इलायची पाउडर, बादाम काजू सजाने के लिए, 10 - 15 गोकर्ण के फूल की पत्तियां

विधि –

सबसे पहले एक कप पानी में गोकर्ण की पत्तियां उबाल ले और ढक्कन दे कर आधे घंटे के लिए रख दीजिए। फिर मूंग दाल को धोकर तीन-चार घंटा भिगो दें फिर पानी निकाल कर कम से कम पानी में पिस ले।

एक कढ़ाई में घी लेकर उसको थोड़ा सा पिघला ले और उसमें पिसी हुई दाल डालकर धीमी आंच पर लाल होने तक भूने, आवश्यकतानुसार घी डाल सकते है जिससे सिकाई अच्छी आ जाये।

जब यह दाल भूनकर अच्छे से सुनहरा भूरा रंग हो जाए तब उसमें दूध की मलाई डालें और दो-तीन मिनिट भून लीजिए, उसके बाद उसमें गर्म दूध और यह गोकर्ण के फूल का पानी दोनों मिलाकर दाल में धीरे-धीरे करके डालें, दाल का यह मिश्रण अच्छा गाढ़ा हो जाएगा तब उसमें चीनी डालें और थोड़ा हिलाते रहे जब तक कि हलवा घी छोड़े जब तक भूने। गोकर्ण के फूल से इसका बढ़िया नीला कलर आएगा। अब गैस बंद करदे। इसे बादाम काजू के कतरन से सजाकर परोसे।

अपराजिता के फूल दिखने में जितने खूबसूरत है उतने ही लाभदायक भी, इसकी चाय पीने से ताजगी आती है और दिनभर की थकान दूर होती है। साथ ही फूलो से रंग बिरंगे शरबत और चावल बना सकते है जो खाने का जायका भी बढ़ाता है।

सेहत का खजाना

ठंड का मौसम शुरू हो गया है और इस मौसम में खांसी-जुकाम लगा ही रहता है, उससे बचने के लिए कुछ देसी घरेलू नुस्खों को अपना सकते है –

1) बार-बार उठने वाली **काली खांसी** से छुटकारा पाने के लिए लौंग को भूनकर चबाये।

2) **गले की खराश** में तुलसी, दालचीनी और अदरक की चाय पीने से आराम मिलता है।

3) तुलसी के पत्तों के साथ काली मिर्च चबाकर खाने से **सर्दी जुकाम** में राहत मिलती है।

4) सर्दी जुकाम के कारण **सिर दर्द** हो जाने पर दोनों कानों में हरे धनिए के रस की कुछ बूंदें डालने से आराम मिलता है।

5) काली मिर्ची और मिश्री मुंह में रखकर चूसे इससे **काली खांसी** में आराम मिलता है।

6) सेंधा नमक मुंह में रखकर धीरे-धीरे चूसे इससे भी **खांसी** में फायदा होता है।

7) जिन्हे **भूख ना लगने** की शिकायत हो उन्हें पालक का साग जरूर खाना चाहिए, नियमित सेवन से आपकी भूख खुल जाएगी।

8) रात को सोते समय शहद चाटने से **नींद** अच्छी आती है।

9) हींग को पानी में उबाल कर उससे कुल्ले करने से **दांत का दर्द** दूर होता है।

- पूनम राठी जी

हँसी खुशी के पल

किसी को तैरना
आता है क्या...।।

मेरी चाय मे बिस्कुट डूब
गया है, कोई निकाल दो..।

बचपन **HANDWRITING**
सुधारने में निकल गया

अब जिंदगी **KEYBOARD**
पर बीत रही हैं।

काम ऐसा करो कि
लोग कहे

तुम रहने दो
हम कर लेंगे।

दूध को गैस पर रखें कुछ
मिनिट के बाद दूध भी
नसीहत देने लगता है
मुझे छोड के जो तुम
जाओगे बडा पछताओगे
...बडा पछताओगे।

मच्छर पहली बार उडा..
वापस आने पर उसके
पापा ने पूछा - कैसा लगा
उडकर?
मच्छर - बहुत अच्छा लगा
जहां भी गया, लोग
तालियां बजा रहे थे..!

इतिहास गवाह है...
कि अलार्म बंद करने के
बाद जितनी मस्त नींद
आती है, उतनी तो पुरी
रात नहीं आती है....

आदिशक्ति चंडी माता मंदिर घुंचापाली - छत्तीसगढ़
(संभावनाओं का प्रदेश)

शक्ति पीठों की श्रृंखला में प्रमुख नाम आता है, **महासमुंद जिले के बागबाहरा के निकट स्थित गांव घुंचापाली में स्थापित चंडी माता मंदिर का।** छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 105 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव बगबहरा, अपने चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य समेटे, कोलाहल से दूर एक शांत जगह है और वहीं पहाड़ियों से घिरे, चहुं तरफ जंगल, हरियाली एवं जंगली जानवरों से युक्त, ग्राम घुंचापाली में स्वयंभू मां चंडी विराजमान हैं। ऊंचाई पर होने के बावजूद बच्चे बूढ़े सभी को मां के सुलभ दर्शन प्राप्त होते हैं। क्योंकि ढलान युक्त रास्ता होने के कारण मंदिर की चढ़ाई सुगम है। यहां पर सच्चे मन से मांगी गई हर मुराद पूरी होती है।

मन्दिर के नज़दीक एक प्राचीन कुंआ है, माता के आशीर्वाद से वह कभी नहीं सूखता। यहां आने वाले दर्शनार्थी, इसके निर्मल जल का सेवन करते हैं। मुख्य मन्दिर से ऊपर पहाड़ पर, 2 किलोमीटर की दूरी पर, चंडी माता का मंदिर है। पास ही जुनवानी ग्राम में एक पठारी मैदान है, जिसमें एक शिव मंदिर एवं एक नागिन के आकार का पतला लंबा पत्थर है, जिसे **नागिन पत्थर** कहते है, जिससे एक विशेष ध्वनि निकलती है। इसे **महाभारत कालीन** कहते हैं। यह भी एक विशेष आकर्षण का केंद्र है। मंदिर के सामने तबला नुमा आकृति के पत्थर भी आकर्षित करते हैं। छत्तीसगढ़ के अद्भुत एवं विशिष्ठ मंदिरों की श्रेणी में यह मंदिर आता है।

पांडवों ने जब गुप्त वनवास किया था, तब एक रात्रि यहां भी विश्राम किया था। उसी समय यह मूर्ति प्रकट हुई, एवं पांडवों को चंडी माता ने दर्शन दिए। पांडवो के जाने के पश्चात, यहां आदिवासी राजाओं का राज था। तब माता ने आदिवासी राजा को स्वप्न में आकर कहा, कि मै यहां विराजमान हूं। वास्तविकता पता करने के लिए राजा अर्धरात्रि को वहां पहुंचे। तब चंडी मां ने राजा को साक्षात् दर्शन दिए। उस काल में शेर भी यहां आया करते थे।

राजाओं का राज खत्म होने के पश्चात, यहां आदिवासियों का डेरा था, तब यहां इस मंदिर में सर्प आया करते थे। बाद में भालू आने लगे, जो अभी भी आते हैं। जंगल में जाकर यही भालू खूंखार हो जाते हैं, परंतु यहां पर पालतू पशु की तरह व्यवहार करते हैं।

कई वर्षों तक तंत्र साधना करने वालों ने स्वयं की साधना के लिए मंदिर को गुप्त रखा, ताकि साधना में कोई व्यवधान ना आने पाए। साल 1950-1951 में, यह मंदिर आम जनता के लिए खोला गया। 9/9.5 फीट ऊंची विशाल दक्षिण मुखी इस प्रतिमा का विशेष धार्मिक महत्व है। मूर्ति अवश्य प्राचीन है, परंतु वर्तमान के इस मंदिर का इतिहास 150 वर्ष पुराना है। पूर्व में गोंड बाहुल्य और उड़ीसा भाषीय क्षेत्र होने के कारण, यहां तंत्र साधना का प्रमुख स्थान था। जो साधकों के लिए, गुप्त स्थल था एवं **"तंत्रोक्त प्रसिद्ध उड्डीश शक्तिपीठ"** के नाम से प्रचलित था। 1950-51 से यहां वैदिक ऋति द्वारा, पूजा पाठ प्रारंभ हुआ।

मूर्ति की विशेषता यह भी है कि उसकी लंबाई दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, इसी कारण कई बार मंदिर को तोड़कर पुन: निर्मित करना पड़ा। आदिवासियों एवं स्थानीय जन की आराधना का यह विशेष केंद्र है। प्रत्येक नवरात्रि में ज्योति कलश भक्तों द्वारा प्रज्वलित किए जाते हैं। एक अखंड दिये की ज्योति, निर्बाध रूप से, सदैव प्रज्वलित होती रहती है। 8 से 10,000 ज्योति कलश, नवरात्रि में प्रज्वलित किए जाते हैं।

स्वच्छ प्राणवायु शुद्ध एवं निर्मल नीर, वातावरण में गूंजती कल कल ध्वनि, पर्वत से टकराती बूंदे, खेत खलिहान, जंगल, झरनों का मधुर स्वर, स्वच्छंद विचरण करते भालू, देखने के शौकीन सैलानियों के लिए, यह एक खास जगह है। **भालुओं के परिवार को देखकर दर्शक गण अचरज में पड़ जाते हैं, जो प्रसाद खाते हैं, एवं परिक्रमा भी करते हैं,** यह सब यही देखने को मिलता है, जो बिना किसी को नुकसान पहुंचाए, चुपचाप वापस चले जाते हैं। **मंदिर के पीछे गुफा में मां भद्रकाली एवं भगवान शिव विराजमान हैं।**

- अंजलि ओझा जी

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

CALL US AT
+918080518745

Website Design &
Development

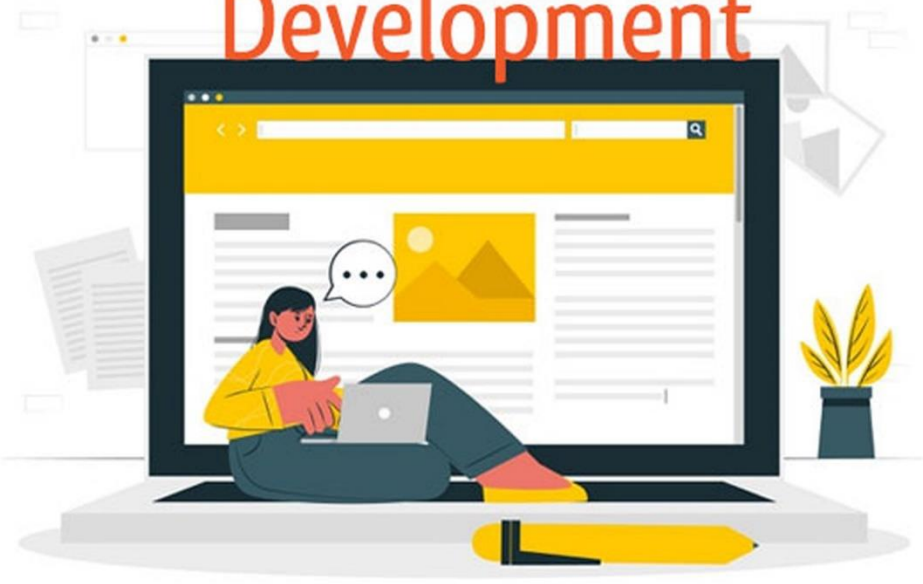

Responsive & creative website, website development, dynamic website, blog website, cms based website, portfolio website, e-commerce solution.

www.mxcreativity.com

दिसम्बर–अंक

ओशो

जन्मदिन : ११ दिसम्बर

कृपया *pdf.* खोलिए एवं

रचनाओं का आनन्द उठाईए।

अपने साहित्य–प्रेमी मित्रों को फारवर्ड करना न भूलें।

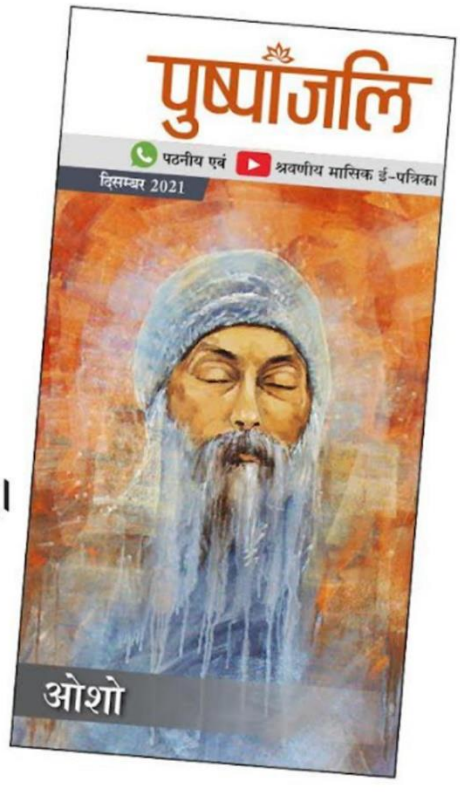

खुशबू

लघुकथा

प्रकृति के सौंदर्य की अद्भुत छटा बिखेरते ऊंचे-ऊंचे नील गगन से मिलने की चाहत रखते पर्वत, सूर्योदय के समय झील का स्वर्णिम किरणों में एकरूप हो सुनहरी चुनर में संवरना, प्रकृति के इस अनुपम सौंदर्य के बीच बसा माउंट आबू में स्थित पैराडाइज गर्ल्स हॉस्टल के भव्य कॅम्पस में लगा सुंदर उद्यान हॉस्टल के आकर्षण का मुख्य केंद्र था, और बागवानी करने वाले रामू काका यहां अध्ययनरत सभी लड़कियों के चहेते काका।

दिसंबर में जहां शीत ऋतु चरम पर जा शीतलता से संपूर्ण सृष्टि को कंपित कर जाती, ऐसी ठिठुरती सुबह में सभी लड़कियां अपने कमरों में अंगीठी सुलगाकर शॉल ओढ़े सूर्य देव के तेजस्वी किरणों की प्रतीक्षा कर रही थी तभी खिड़की से पार बागवानी करते रामू काका पर चहक की नजर पड़ी जो इतनी ठंड में भी कांपते हाथों से पौधों को पानी डाल रहे थे। बाग सभी तरह के फूलों से ऐसा सुसज्जित था कि देखने वालों की नजरें थम जाती और इसका पूरा श्रेय रामू काका को जाता वह केवल बागवानी ही नहीं करते, उनका इस बाग के हर पेड़ पौधे संग आत्मीयता का रिश्ता जुड़ा था।

चहक ने फुर्ती से अपना बैग खोल एक ओवरकोट निकाला और पहुंच गई रामू काका के पास प्यार भरी डांट के साथ उन्हें ओवरकोट दे कहने लगी काका इसे पहन लो ठंड से राहत मिलेगी। "अरे बिटिया! इसकी कोई जरूरत नहीं क्यों परेशान होती हो।" तभी चहक आंखें तरेर कर देखने लगी। बेटी के से वात्सल्य भाव पाकर काका गदगद हुए और ओवरकोट पहनने लगे। तभी चहक कहने लगी "काका कुछ देर रुक कर भी तो पेड़ पौधों को पानी डाला जा सकता है, क्यों ठंड में परेशान होते हो आप **"अरे बिटिया हम मानव को कैसे चाय, नाश्ता समय पर चाहिए वरना हमारी अवस्था जरा से अभावों के चलते भी विचलित हो जाती है, पेड़ पौधों को जुबान नहीं पर जान तो है देखों इन्हें ठंड, बारिश, ग्रीष्म को सहते हुए भी कितने तटस्थ रहते हैं, इनकी कोमलता और खूबसूरती को देखकर हर मन प्रसन्न हो जाता हैं, इन पुष्पों की पंखुड़ियों में कुदरत ने अनूठी चित्रकारी की हैं फिर भी इन्हें तनिक गुमान नहीं।"**

यह रातरानी रातों में खुशबू लुटाती है, जाई, जुही, चमेली, मोगरा इनकी महक तो देवताओं को भी लुभाती रही है। बिटिया वहां सुंदर कमल देख रही हो दलदल में भी खिल रहा है। कीचड़ में होने पर भी उसके गुणों के चलते उसकी गुणवत्ता कम नहीं हुई, **विपरीत परिस्थितियों को जो मात देते है वहीं तो ईश्वर को भी प्रिय होते है इसलिए लक्ष्मी जी को कमल अधिक प्रिय है।** चहक तन्मयता से उनकी बातें सुन रही थी।

गुलाब की क्यारियों के पास पहुंचते ही काका के मुखमंडल पर तेजोमय कांति छा गई कहने लगे देखो इन **गुलाबों को कितने काँटो के बीच अपना अस्तित्व लिए हैं फिर भी मुस्कुरा रहे है** इन्हें तो इनकी जीवन लीला का भी अता पता नहीं यह श्री चरणों में समर्पित होगा या मरघट तक जायेगा या विवाह समारोह में किसी दो जिंदगियों को एक करेगा, कितना निर्मल स्वरूप है इनका देखो और इनकी महानता के क्या कहने किसी तरह का भेदभाव न रखते हुए अपनी खुशबू से सभी को मोहित करता है। कभी तितलियां इन पर बैठ रसपान करती तो कभी मधुमक्खियों के तीखे डंक सहकर भी यह मुस्कुराते रहते। सुबह खिलकर शाम होते होते यह मूर्छित होते है पर अपनी छोटी सी जीवनलीला में भी यह केवल मुस्कुराना जानते हैं।

फूलों से सुगंधित इत्र बनते है, तो कोई इन्हें पेय के रूप में लेते है इन फूलों ने केवल परोपकार की भावना धारण की है बेटी तभी यह सभी के आकर्षण का केंद्र बन पाये हैं और हर जगह भेंट स्वरूप में दिये जाते हैं पाने वाला भी इनके स्पर्श से प्रसन्न हो जाता है।

बिटिया यहां रहकर तुम पढाई के साथ ही इन फूलों से जीवन जीने की कला सीख जाओगी तो तुम्हारी पूरी जिंदगी संवर जायेगी और यह प्यार भरी खुशबू तुम्हारे जीवन में अनेक खुशियों के रंग भर देगी।

काका ने आज कितनी गहन बात कह दी फूलों के गुणों से ही तो उन्हें असिम लोकप्रियता मिली है। चहक ने खुश होकर काका से विदा ली और आज उसे जीवन जीने का पाठ भली प्रकार से समझ आया जिसे आत्मसात करने का उसने दृढ़ संकल्प लिया फूलों की खुशबू उसके अंतस में उतर गई।

- राजश्री राठी जी

भारतीय परम्परा मासिक ई-पत्रिका

के पुराने अंक को देखने के लिए फोटो पर क्लिक करें !!

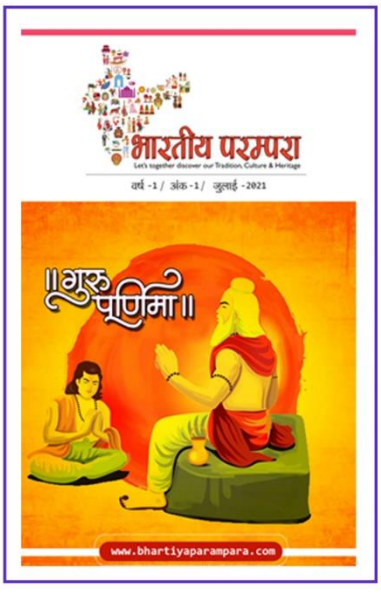

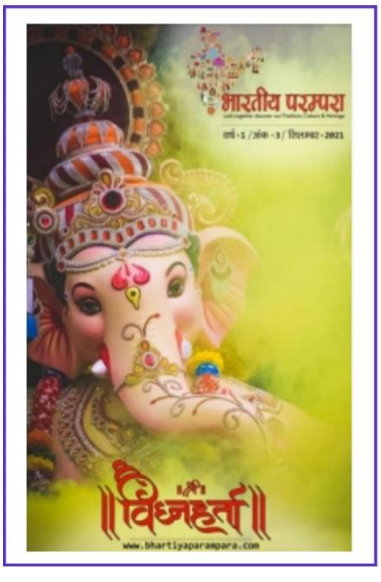

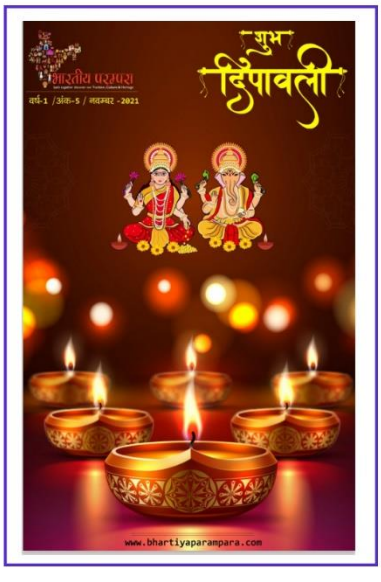

हार्दिक आभार

सुगंधित पेड़-पौधे है प्रकृति का उपहार
पेड़ पौधे जरूर लगाए कम से कम एकबार
फूलों की खुशबू को रखे बरकरार
जिससे प्रकृति को मिले आधार।।

www.bhartiyaparampara.com